ONLYIAS
BY PHYSICS WALLAH

UPSC WALLAH

कला एवं संस्कृति

प्रारंभिक तथा मुख्य परीक्षा हेतु
एक समग्र शिक्षण श्रृंखला

विषय सूची

1. भारतीय स्थापत्य, मूर्तिकला और अभिलेख 1
2. मंदिर वास्तुकला और मूर्तिकला 29
3. भारतीय चित्रकला 43
4. भारतीय हस्तशिल्प 66
5. भारतीय नृत्य रूप 81
6. भारत में संगीत 92
7. भारतीय रंगमंच और सिनेमा 102
8. भारत की कठपुतली 108
9. भारत में धर्म 111
10. भक्ति और सूफी परंपराएँ 126
11. भारतीय दर्शन 134
12. भारतीय साहित्य एवं भाषा 140
13. विभिन्न युगों में विज्ञान और प्रौद्योगिकी 155
14. विदेशों में भारतीय संस्कृति की झलक 160
15. यूनेस्को की भारत में मूर्त/अमूर्त विश्व धरोहर स्थलों की सूची 165
16. विदेशों में भारतीय संस्कृति की झलक 177
17. विविध विषय 182

भारतीय स्थापत्य, मूर्तिकला और शिलालेख

1

परिचय

मूल रूप से वास्तुकला का अर्थ संरचनाओं को डिजाइन करने की कला और विज्ञान से है। भारतीय वास्तुकला भारत के इतिहास, संस्कृति और धर्म में निहित है। भारतीय वास्तुकला की कहानी प्राचीन सिंधु घाटी सभ्यता से लेकर भारत में स्वतंत्रता के बाद के काल तक के विकास की कहानी को भी दर्शाती है। मूर्तिकला इस अर्थ में वास्तुकला से भिन्न है कि मूर्तिकला एक दृश्य कला रूप है जिसमें कला के त्रि-आयामी कार्यों को बनाने के लिए सामग्रियों को आकार दिया जाता है या संयोजित किया जाता है तथा इसमें अभियांत्रिकी और माप से अधिक सौंदर्यशास्त्र (Aesthetics) पर ध्यान दिया जाता है।

इस अध्याय में, हम सिंधु घाटी सभ्यता, वैदिक काल, मौर्य एवं मौर्योत्तर काल, गुप्त काल, सल्तनत एवं मुगल काल, औपनिवेशिक काल तथा स्वतंत्रता पश्चात् के काल जैसी विभिन्न समयावधि के वास्तुशिल्प योगदान, मूर्तिकला तथा मिट्टी के बर्तन बनाने की कला (Pottery) पर चर्चा करेंगे।

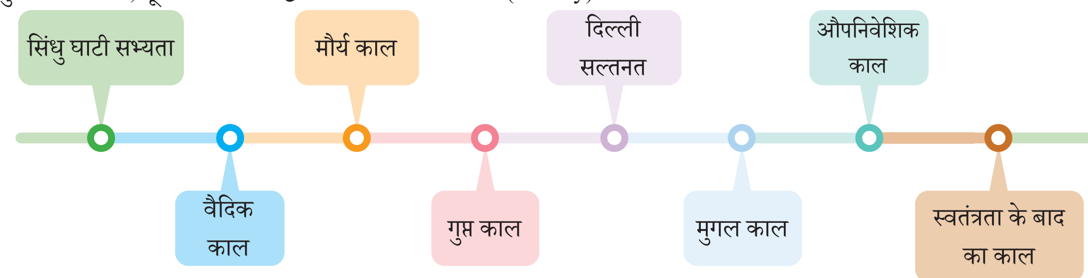

चित्र 1.1: इतिहास की समयरेखा

सिन्धु घाटी सभ्यता (INDUS VALLEY CIVILIZATION)

सिंधु घाटी सभ्यता का उद्भव तीसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व के उत्तरार्ध में सिंधु नदी के तट पर हुआ था। इस काल के स्थलों में उत्खनन किया जाने वाला प्रथम स्थल हड़प्पा था इसलिए इस सभ्यता को हड़प्पा सभ्यता के नाम से भी जाना जाता है। भारतीय वास्तुकला के सबसे प्राचीन अवशेष हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, रोपड़, कालीबंगा, लोथल और रंगपुर में पाए जाते हैं। सिंधु घाटी सभ्यता (IVC) के कुछ महत्त्वपूर्ण स्थल और उनकी संबंधित विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

स्थल (Sites)	मूर्तियाँ एवं स्थापत्य अवशेष Sculptures and Architectural Remains
हड़प्पा राज्य - पंजाब (पाकिस्तान) नदी- रावी	छः अन्न भंडारों की दो पंक्तियाँ, पुरुष धड़ (लाल बलुआ पत्थर), लिंगम और योनि के पत्थर के प्रतीक, मातृदेवी और पासा
मोहन जोदड़ो राज्य - सिंध (पाकिस्तान) नदी – सिन्धु	❑ दाह संस्कार के बाद दफनाना, विशाल अन्न भंडार, विशाल स्नानागार (सबसे बड़ी इमारत), पशुपति मुहर एवं मातृ देवी की एक टेराकोटा मूर्ति, नृत्य करती हुई स्त्री की एक कांस्य प्रतिमा, कांस्य की भैंस, दाढ़ी वाला आदमी। ❑ इसमें एक ऊँचे चबूतरे पर एक नियोजित शहर बसाया गया था, जिसमें दो अलग-अलग क्षेत्र थे। एक को दुर्ग (Citadel) के रूप में तथा दूसरे को निचले शहर (Lower town) के रूप में पहचाना जाता है।
चन्हुदड़ो राज्य - सिंध (पाकिस्तान) नदी – सिन्धु	शिल्प उत्पादन के लिए विशेष रूप से समर्पित इस स्थल पर मनका निर्माण सहित, शंख काटना, धातु-कर्म, मुहर बनाना और वज़न नापना, ईंट पर कुत्ते के पंजे की छाप बनाना, बैलगाड़ी का टेराकोटा मॉडल तथा कांस्य खिलौना गाड़ी के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
लोथल राज्य - गुजरात नदी - भोगवा और साबरमती का संगम	❑ महत्त्वपूर्ण नौसैनिक व्यापार स्थल, बंदरगाह और गोदीखाना, अन्न भंडार, दो लोगों को एक साथ दफ़नाने के साक्ष्य (पुरुष और महिला एक साथ)। ❑ दुर्ग को दीवार से नहीं घेरा गया था, बल्कि ऊँचाई पर बनाया गया था। ❑ पूरी बस्ती को किलेबंद कर दिया गया था और शहर के भीतर के हिस्सों को भी दीवारों से पृथक कर दिया गया था।

- कई घरों में एक केंद्रीय आँगन होता था जिसके चारों ओर कमरे बनाए जाते थे। आँगन आवासीय भवन का केंद्र था, जिसके चारों ओर कमरे थे। यह खाना पकाने और बुनाई जैसी गतिविधियों का केंद्र था।
- कालीबंगन के, कई घरों में अक्सर एक कमरे में जहाँ बाहर से पहुँचा जा सकता था कुओं का निर्माण किया गया था, जिनका संभवतः राहगीरों द्वारा उपयोग किया जाता था।

❑ **जल निकासी व्यवस्था (Drainage System)**

- प्रत्येक घर को सड़क की नालियों से जोड़ा गया था।मुख्य चैनल गारे से निर्मित ईंटों से बनाए गए थे तथा उन्हें ढीली ईंटों या चूना पत्थर से ढक दिया गया था, जिन्हें सफाई के लिए हटाया जा सकता था।

चित्र 1.3: अपवाह प्रणाली

- घर की नालियों को पहले एक नाबदान या सेसपिट **(sump or cesspit)** में खाली किया जाता था जिसमें ठोस पदार्थ जमा हो जाता था जबकि अपशिष्ट जल सड़क की नालियों में बह जाता था।
- सफाई के लिए नाबदान के साथ अंतराल पर बहुत लंबे जल निकासी चैनल उपलब्ध कराए गए थे।

ऊपरी शहर की वास्तुकला (Architecture of Upper Town)

❑ **योजना (Planning):** इसका निर्माण मिट्टी से बनी ईंटों के मंच पर किया गया था तथा इसे एक दीवार के माध्यम से निचले शहर से भौतिक रूप से अलग किया गया था।

चित्र 1.4: वृहद स्नानागार

❑ **उद्देश्य (Purpose):** इसमें महत्त्वपूर्ण आवासीय संरचनाएँ थीं, जिन पर संभवतः शासक वर्ग के सदस्यों का कब्जा था। इसमें ऐसी संरचनाएँ शामिल थीं जिनका उपयोग विशेष सार्वजनिक उद्देश्यों के लिए किया जाता था। इनमें विशाल स्नानागार और गोदाम (अन्न भंडार) शामिल थे।

❑ **ऊपरी नगर में अन्य महत्त्वपूर्ण संरचनाएँ (Other important structures in the Upper Town)**

- **महान स्नानघर (मोहनजोदड़ो):** यह किसी प्रकार के विशेष अनुष्ठान स्नान के लिए बनाया गया था।
  - ❑ यह आँगन में बना एक बड़ा आयताकार टैंक था जो चारों तरफ से गलियारे से घिरा हुआ था।
  - ❑ स्नानागार का फर्श पक्की ईंटों से बनाया गया था।
  - ❑ कपड़े बदलने के लिए इसके आस-पास कमरे बनाए गए थे।
  - ❑ इसमें ईंटों को जिप्सम गारे के मिश्रण के साथ जलरोधी तरीके से बिछाया गया था।
- **अन्न भंडार (Granaries):** ये हड़प्पा स्थलों का एक महत्त्वपूर्ण भाग थे।
  - ❑ महान भंडारगृह मोहनजोदड़ो की सबसे बड़ी इमारत थी।
  - ❑ हड़प्पा के गढ़ में छः अन्न भंडार थे। वृत्ताकार ईंटों के चबूतरे स्पष्टतः अनाज झाड़ने के लिए बनाए गए थे, क्योंकि इसके फर्श की दरारों में गेहूँ और जौ पाए गए हैं।
  - ❑ कालीबंगन में ईंटों के चबूतरे के दक्षिणी भाग का उपयोग संभवतः अन्न भंडार के लिए किया जाता था।

विचारणीय तथ्य

"विशाल स्नानघर व अन्न भंडार जैसे सार्वजनिक बुनियादी ढाँचे पर जोर किस हद तक नगरी जीवन के लिए सांप्रदायिक दृष्टिकोण को दर्शाता है, तथा समकालीन शहर इस सहकारी मॉडल से क्या सबक ले सकते हैं?"

मूर्तिकला (Sculpture)

भारतीय उपमहाद्वीप की पहली ज्ञात मूर्तियाँ सिंधु घाटी सभ्यता से प्राप्त हुई थीं, जो पत्थर, कांस्य और मिट्टी से बनी थीं।

पत्थर की मूर्तियाँ (Stone Statues)

❑ **एक दाढ़ी वाले आदमी (Bearded Man) की प्रतिमा (मोहनजोदड़ो):** यह मूर्ति स्टीटाइट से बनी है और इसकी व्याख्या एक पुजारी/धार्मिक पुरुष के रूप में की जाती है। यह उर और सुसा के सुमेरियन स्थलों में खोजी गई एक अन्य समान आकृति से काफी मिलती-जुलती है।

चित्र 1.3: दाढ़ी वाला आदमी

- **विशेषताएँ:** दाढ़ी वाले व्यक्ति की आकृति को एक शॉल ओढ़े हुए दर्शाया गया है जो बाएँ कंधे के ऊपर से दाहिने भुजा के नीचे की ओर डाली गई है। इस शॉल को त्रिफुलियाँ नमूनों से सजाया गया है। आँखें थोड़ी लम्बी और आधी बंद होती दर्शायी गई हैं जैसे यह पुरुष ध्यानावस्थित मुद्रा में है। बालों को बीच की मांग द्वारा दो हिस्सों में बाँट दिया गया है, तथा सिर के चारों ओर एक सादा बुना हुआ फीता बंधा हुआ दिखाया गया है। दाहिने हाथ में बाजूबंद पहना हुआ प्रतीत होता है और गर्दन के चारों ओर उकेरे गए छेद एक हार का संकेत देते हैं।

❑ **लाल बलुआ पत्थर से निर्मित नर धड़ (हड़प्पा):** इसमें सिर और भुजाओं को जोड़ने के लिए गर्दन तथा कंधों में गर्तिका छिद्र हैं। धड़ (Male torso) की ललाट मुद्रा को सचेत रूप से अपनाया गया है। कंधे अच्छे से पके हुए हैं और पेट थोड़ा उभरा हुआ है।

चित्र 1.3: बलुआ पत्थर से बना धड़

❑ **पुरुष नर्तक:** इसकी खोज हड़प्पा में हुई थी, जो संगीत और नृत्य के महत्त्व को दर्शाता है।

कांस्य आकृतियाँ (Bronze Figures)

कांस्य ताँबे और टिन का एक मिश्रण है। हड़प्पावासियों को कांस्य ढलाई का ज्ञान था। यहाँ मानव और पशु आकृतियों की कांस्य मूर्तियाँ मिलीं, जो "खोई हुई मोम तकनीक" या "साइर पर्ड्यू" **(Cire Perdue)** का उपयोग करके बनाई गई थीं।

❑ कांसे की बनी हुई जानवरों की मूर्तियों में भैंस और बकरी की मूर्तियाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। भैंस का सिर और कमर ऊँची उठी हुई है तथा सींग फैले हुए हैं। सिंधु सभ्यता के सभी केंद्रों में कांसे की ढलाई का काम बहुतायत में होता था। लोथल में पाया गया तांबे का कुत्ता और पक्षी तथा कालीबंगा में पाई गई साँड़ की कांस्य मूर्ति को हड़प्पा और मोहनजोदड़ो में पाई गई ताँबे और कांसे की मानव मूर्तियों से किसी प्रकार भी कमतर नहीं कहा जा सकता। दैमाबाद (महाराष्ट्र) की कांस्य मूर्तियाँ एक अद्वितीय मानव आकृति द्वारा संचालित रथ का प्रतिनिधित्व प्रस्तुत करती हैं जिसमें सबसे आगे मजबूत बैल दर्शाए गए हैं।

- उत्खनन से पश्चिमी यूपी में लगभग 800 ईसा पूर्व आर्यों द्वारा तीर और भाले जैसे लोहे के हथियारों के उपयोग का पता चलता है।
- लोहे की कुल्हाड़ी का उपयोग ऊपरी गंगा बेसिन में वनों को साफ करने के लिए किया जाता था। वैदिक काल के अंत में लोहे का ज्ञान पूर्वी उत्तर प्रदेश और विदेह (मिथिला क्षेत्र) में फैल गया।
- इस काल में तांबा, टिन, सोना, कांसा और सीसा आदि धातुओं का उल्लेख मिलता है। तांबे की वस्तुओं का उपयोग युद्ध और शिकार के लिए हथियार बनाने में किया जाता था।
- इन्हें कांच के निर्माण कार्य का भी ज्ञान था।

यद्यपि कला और वास्तुकला के संदर्भ में वैदिक काल बाद के काल की तुलना में उतना अच्छी तरह से प्रलेखित नहीं है जबकि पुरातात्विक खोज, पाठ्य संदर्भ और बाद के विकास एक समृद्ध सांस्कृतिक और धार्मिक परिदृश्य का सुझाव देते हैं जिसने भारत में बाद की कलात्मक और स्थापत्य परंपराओं की नींव रखी।

मौर्यकालीन कला एवं वास्तुकला (MAURYAN ART AND ARCHITECTURE)

मगध ने एक दुर्जेय साम्राज्य के रूप में विकसित होकर, पड़ोसी क्षेत्रों पर अपना प्रभुत्व बढ़ा लिया। ईसा पूर्व चौथी शताब्दी तक मौर्यों ने अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया और तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व तक भारत का एक बड़ा हिस्सा मौर्य शासन के अधीन आ गया। पूजा के विभिन्न रूपों के अस्तित्व के बावजूद, बौद्ध धर्म सबसे व्यापक रूप से अपनाया जाने वाला सामाजिक और धार्मिक आंदोलन बनकर उभरा, जिसने उस समय की कला और वास्तुकला को प्रभावित किया। मौर्य साम्राज्य की कला को राज्य संरक्षण की उपस्थिति या अनुपस्थिति के आधार पर दरबारी कला और लोकप्रिय कला में विभाजित किया जा सकता है।

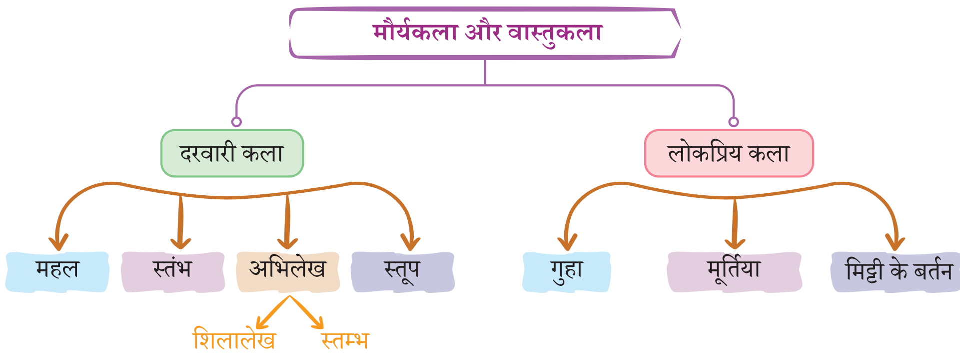

चित्र 1.14: मौर्य कला एवं वास्तुकला

दरवारी कला (Court Art)

इसमें शासकों द्वारा बनवाए गए वास्तुशिल्प कार्य शामिल हैं। इसका उपयोग राजनीतिक और धार्मिक उद्देश्यों के लिए किया जाता था। इनमें से कुछ वास्तुशिल्प कार्यों में महल, स्तंभ, शिलालेख और स्तूप शामिल हैं।

महल/प्रासाद (Palaces)

- मौर्यकालीन महल मौर्यकालीन कला और वास्तुकला के वैभव के उदाहरण थे।
- चंद्रगुप्त मौर्य का महल ईरान के पर्सेपोलिस में अचमेनिद महलों से प्रेरित था। मेगस्थनीज के अनुसार यह मानव जाति की महानतम कृतियों में से एक थी। लकड़ी प्रमुख निर्माण सामग्री थी।
- कुम्रहार स्थित अशोक के महल में 80 खंभों वाला एक भव्य सभा कक्ष था। सभी स्तंभ चट्टानों को काटकर बनाए गए थे। सजावटी नक्काशी वाली लकड़ी की संरचनाएँ महल के शेष भाग को कवर करती हैं।

स्तंभ (Pillars)

स्तंभों के निर्माण की परंपरा बहुत पुरानी है और यह देखा जा सकता है कि अचमेनियन साम्राज्य में भी स्तंभों का निर्माण प्रचलित था। हालाँकि, मौर्य स्तंभ अचमेनियन स्तंभों से भिन्न हैं। मौर्य स्तंभ चट्टानों को काटकर बनाए गए स्तंभ (rock-cut pillars) हैं, जो नक्काशी करने वाले के कौशल को प्रदर्शित करते हैं जबकि अर्मेनियाई स्तंभों का निर्माण एक राजगीर द्वारा टुकड़ों में किया गया है। पत्थर के स्तंभ अशोक द्वारा बनवाए गए थे, जो मौर्य साम्राज्य के उत्तर भारतीय भाग में पाए गए हैं और उन पर शिलालेख उकेरे गए हैं। अशोक के स्तंभ शिलालेख राज्य के प्रतीक के रूप में और युद्ध में विजय की स्मृति में बनाए गए थे।

- स्तंभ आमतौर पर चुनार के बलुआ पत्थर से बनाए जाते थे।

चित्र 1.14: मौर्यकला और वास्तुकला

- स्तंभ चार भागों से बना हुआ
  - **शीर्ष आकृति (Capital Figure):** वे आम तौर पर बैल, शेर, हाथी आदि जैसे जानवरों की आकृतियाँ होती हैं। सभी प्रमुख आकृतियाँ सशक्त होती हैं तथा एक वर्गाकार या गोलाकार शीर्ष फलक (Abacus) पर उकेरी जाती हैं।
  - **शीर्ष फलक (Abacus):** आकृतियों के शीर्ष पर, एक गोलाकार या आयताकार आधार होता था जिसे अबेकस के नाम से जाना जाता था जिस पर जानवरों की आकृतियाँ रखी गई थीं।
  - **शीर्ष (Capital):** यह शाफ्ट के ऊपर स्थित होता है और कमल के आकार या घंटी के आकार का हो सकता है। ईरानी स्तंभों से प्रभावित घंटी के आकार के स्तंभ अपनी चमकदार और पॉलिशदार फिनिश के लिए जाने जाते हैं।
  - **शाफ़्ट (Shaft):** शाफ़्ट आधार बनाता था और पत्थर या मोनोलिथ के एक ही टुकड़े से बना होता था।

चित्र 1.19: धौली शिलालेख

स्तंभ लेख (Pillar Edicts)

- **लघु स्तंभ अभिलेख**
  - ये साँची, सारनाथ, प्रयागराज, रुम्मिनदेई और निगाली सागर में पाए गए हैं।
  - ये प्राकृत भाषा और ब्राह्मी लिपि में लिखे गए हैं।
  - **अशोक का रूमेंदेई स्तंभ अभिलेख (लुम्बिनी, नेपाल):** अशोक ने उस स्थान की यात्रा की और पूजा की, क्योंकि शाक्यमुनि का जन्म वहीं हुआ था।
  - **साँची, सारनाथ और प्रयागराज स्तंभ अभिलेख:** इसमें उल्लेख है कि संघ में असंतुष्टों को दंड का सामना करना पड़ता था। प्रयागराज अभिलेख में अशोक की रानी करुवाकी का उल्लेख है।
- **प्रमुख स्तंभ अभिलेख (Major Pillar Edicts)**
  - इनकी संख्या कुल सात है। **ये निम्नलिखित स्थानों पर पाए गए हैं:** इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश), रामपुरवा (बिहार), कंधार (अफगानिस्तान), लौरिया-नंदनगढ़ (बिहार), लौरिया अरराज (बिहार), दिल्ली-टोपरा (सभी सात प्रमुख स्तंभ शिलालेख मौजूद हैं) और दिल्ली-मेरठ।
  - कंधार अभिलेख को छोड़कर अन्य सभी अभिलेख प्राकृत भाषा और ब्राह्मी लिपि में लिखे गए हैं। रामपुरवा में दो अशोक स्तंभ हैं अर्थात बैल शीर्षस्तंभ (कोई राजाज्ञा अंकित नहीं है) और सिंह शीर्षस्तंभ (राजाज्ञा I से VI तक उत्कीर्ण) हैं।

चित्र 1.20: रामपुरवा सिंह स्तंभ

प्रमुख स्तंभ लेख	विवरण
राजाज्ञा I	लोगों की सुरक्षा के लिए उनके आदर्शों को रेखांकित किया।
राजाज्ञा II	दया, सत्यता, धार्मिकता आदि के संदर्भ में धम्म का वर्णन किया गया है।
राजाज्ञा III	लोगों से क्रूरता, शत्रुता, हिंसा और क्रोध से दूर रहने को कहा गया।
राजाज्ञा IV	राजुकों की जिम्मेदारियाँ और कर्तव्य।
राजाज्ञा V	उन पक्षियों व जीवों की सूची जिनका वध विशिष्ट दिनों में किया जाना चाहिए, लेकिन जिन्हें कभी नहीं मारा जाना चाहिए।
राजाज्ञा VI	धम्म नीति
राजाज्ञा VII	अशोक मानसिक शुद्धता और संयम के लिए प्रत्येक समूह की आकांक्षा को रेखांकित करता है।

चित्र 1.21: अशोक के अभिलेख

प्रयाग स्तंभ (एक अशोक स्तंभ) पर शिलालेख

- अशोक का शिलालेख प्राकृत भाषा और ब्राह्मी लिपि में है।
- समुद्रगुप्त का शिलालेख हरिषेण द्वारा संस्कृत भाषा में लिखा गया है। इस शिलालेख को प्रयाग प्रशस्ति के नाम से भी जाना जाता है।
- बीरबल माघ मेला शिलालेख 16वीं शताब्दी ई. का है।
- जहाँगीर का शिलालेख फ़ारसी भाषा और सुंदर नस्तालिक लिपि (Nastaliq script) में लिखा गया था।

विचारणीय तथ्य

"प्रमुख व्यापार मार्गों और शहरी केंद्रों जैसे प्रमुख स्थलों पर अशोक के स्तंभों की रणनीतिक स्थापना ने विविध मौर्य समाज के भीतर सांस्कृतिक एकीकरण और संचार को कैसे प्रभावित किया?"

स्तूप (Stupa)

स्तूप में एक गुंबदनुमा अर्द्धगोलाकार संरचना है, जो उल्टे कटोरे की भाँति एक चबूतरे पर निर्मित होती है। इस अर्द्धगोलाकार संरचना को अंड कहा जाता है। स्तूप के भीतर, केंद्रीय कक्ष में स्थित एक ताबूत में बुद्ध के अवशेषों को संरक्षित किया गया था। स्तूप को समय के साथ बुद्ध का प्रतिनिधित्व करने वाले एक वास्तुशिल्प निकाय के रूप में स्वीकार किया जाने लगा।

स्तूप के संरक्षक (Patrons of Stupa)

- इसके संरक्षकों में सामान्य भक्तों से लेकर गहपति (एक धनी संपत्ति-स्वामी) और राजा तक शामिल हैं।
- कई स्थलों पर श्रेणियों द्वारा दान का भी उल्लेख मिलता है।
- हालाँकि, कारीगरों के नाम का उल्लेख करने वाले शिलालेख बहुत कम हैं, जैसे पीतलखोरा में कान्हा (पश्चिमी घाट में सतमाला पर्वत शृंखला) और महाराष्ट्र में कोंडाने गुफाओं (लोनावाला के समीप) में उनके शिष्य **बालाका** का उल्लेख किया गया है।

दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से, संरक्षण का स्वरूप बहुत सामूहिक रहा है तथा शाही संरक्षण के बहुत कम उदाहरण पाए गए हैं। तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में स्तूप की संरचना का एक उदाहरण राजस्थान के बैराट में है।

स्तूप की विशेषताएँ (Features of the Stupa)

बौद्ध स्तूप एक ठोस संरचना वाला एक अर्धगोलाकार गुंबद **hemispherical dome** है।

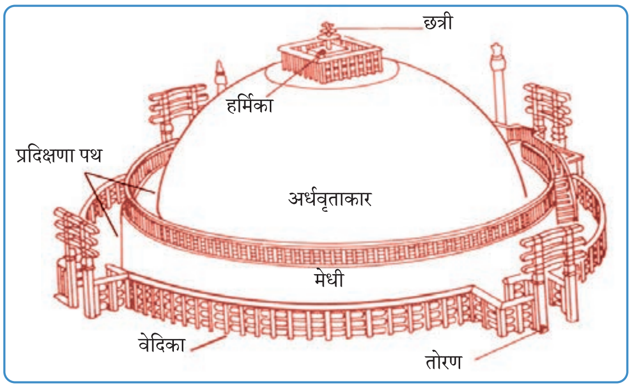

चित्र 1.22: स्तूप के भाग

- **स्तूप का मुख्य भाग कच्ची ईंटों (Unburnt brick)** से बना था, जबकि बाहरी सतह **पक्की ईंटों (Burnt bricks)** से बनी थी।
- इसमें एक गोलाकार बेलनाकार ड्रम होता है जिसके शीर्ष पर हर्मिका और छत्री होती है।
- यह एक परिक्रमा मार्ग या प्रदक्षिणापथ से घिरा होता है, जहाँ भक्तों के परिक्रमा करने के लिए खाली स्थान होता है।
- पूरी संरचना लकड़ी की रेलिंग और प्रवेश द्वारों से भी घिरी हुई थी, जिन्हें तोरण कहा जाता था।
- यहाँ बुद्ध के जीवन की घटनाओं जैसे जन्म, त्याग, ज्ञानोदय, धम्मचक्रप्रवर्तन और महापरिनिर्वाण को कमल, हाथी, जातक कथाओं आदि जैसे प्रतीकों के माध्यम से चित्रित किया गया था।

स्तूप में प्रतीकात्मकता (Symbolism in the Stupa)

यह स्तूप बुद्ध की शिक्षाओं और ज्ञानोदय का प्रतिनिधित्व करता है।

- **'हर्मिका'** निर्वाण प्राप्ति का प्रतीक है।
- **'तोरण'** प्रमुख शिक्षण क्षेत्र हैं जो बुद्ध और धार्मिक विषयों के बारे में कहानियों को दर्शाने वाली नक्काशी से ढके हुए हैं। वे सभी चार दिशाओं में व्यवस्थित हैं और उनमें जातक कथाएँ शामिल हैं।
- **'अंड'** का गहरा महत्त्व यह है कि यह अव्यक्त रचनात्मक शक्ति का प्रतीक है। अंड का उद्देश्य स्वर्ग के असीमित गुंबद की तरह, पुनर्जन्म और मृत्यु के चक्र के एक दृश्य प्रतिनिधित्व के रूप में भी कार्य करना था।
- **छत्र**, जो कुलीनता और भव्यता का ज्ञान देता था, आत्मज्ञान या जीवन के पवित्र वृक्ष का प्रतीक था।
- **धर्म (कानून), संघ (भिक्षुओं का समाज)** और बुद्ध **बौद्ध** धर्म के **तीन रत्न** थे और उनका प्रतिनिधित्व साँची में **'छत्र'** के तीन घटकों द्वारा किया गया था।
- **'वेदिकाओं'** ने धर्मनिरपेक्ष दुनिया के साथ पवित्र परिसर की सीमा का सीमांकन करने का कार्य किया।

स्तूपों की अवस्थिति (Location of Stupas)

भगवान बुद्ध के महापरिनिर्वाण के बाद, सम्राट अशोक ने अपने गुरु की स्मृति में अपने साम्राज्य में बड़ी संख्या में स्तूपों का निर्माण कराने का निर्णय लिया तथा उनमें हड्डियों के टुकड़े, दाँत, बाल आदि अवशेषों को स्थापित किया गया, जिनके ऊपर स्तूपों का निर्माण किया गया था।

- बुद्ध के अवशेषों पर निर्मित स्तूप:
  - बिहार में राजगृह, वैशाली, वेथादीपा और पावा।
  - नेपाल में कपिलवस्तु, अल्लकप्प और रामग्राम।
  - उत्तर प्रदेश में कुशीनगर और पिप्पलिवन।
- पाठ्य परंपरा में अवंती और गांधार सहित कई स्थानों पर, जो गंगा घाटी के बाहर हैं, बुद्ध के अवशेषों पर कई अन्य स्तूपों के निर्माण का भी उल्लेख है।
- भरहुत, बोधगया, अमरावती और नागार्जुनकोंडा अन्य महत्त्वपूर्ण स्थल थे।

साँची का स्तूप (Sanchi Stupa)

साँची का स्तूप, एक विश्व धरोहर स्थल, भोपाल के पास रायसेन ज़िले में बेतवा नदी के पश्चिम में स्थित है। इस विशाल स्तूप का निर्माण ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में अशोक ने करवाया था। इसमें बुद्ध और उनके सबसे श्रद्धेय शिष्यों के धार्मिक अवशेष या भग्नावशेष स्थापित हैं।

चित्र 1.23: सांची स्तूप

- साँची में अन्य अपेक्षाकृत छोटे स्तूपों के साथ तीन मुख्य स्तूप स्थापित किए गए हैं।
  - स्तूप-1 में बुद्ध के अवशेष होने का अनुमान है।
  - स्तूप-2 में तीन अलग-अलग पीढ़ियों के दस कम प्रसिद्ध अर्हतों (जिन्होंने ज्ञान प्राप्त किया है) के अवशेष हैं। उनके नाम अवशेष ताबूत पर पाए जाते हैं।
  - स्तूप-3 में सारिपुत्त और महामौग्ल्यायन (बुद्ध के दो प्रमुख शिष्य) के अवशेष हैं।
- स्तूप के दक्षिणी ओर शिलालेख के साथ अशोक का सिंह-पूँजी स्तंभ पाया जाता है।
- यहाँ ऊपरी प्रदक्षिणा पथ भी है जो इस स्थल के लिए अद्वितीय है।

- पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार में, एनबीपीडब्ल्यू काले और लाल बर्तन चरण का अनुसरण करता है।

कुल मिलाकर, मौर्य कला और वास्तुकला साम्राज्य की सांस्कृतिक समृद्धि, धार्मिक विविधता और अशोक जैसे शासकों द्वारा बौद्ध धर्म और अन्य धर्मों के प्रति संरक्षण को दर्शाती है। इन कलात्मक और वास्तुशिल्प उपलब्धियों ने भारतीय कला और संस्कृति में बाद के विकास की नींव रखी।

विचारणीय तथ्य

"बराबर और नागार्जुनी जैसे गुफा परिसरों की स्थापना ने मौर्य प्रशासन के लिए रणनीतिक या प्रतीकात्मक उद्देश्यों को कैसे पूरा किया, तथा ये संरचनाएँ उस समय के राजनीतिक परिदृश्य में क्या अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकती हैं?"

मौर्योत्तर कला एवं वास्तुकला (POST-MAURYAN ART AND ARCHITECTURE)

किसी काल की कला बदलते सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य को दर्शाती है। मौर्य काल में बौद्ध धर्म को राजकीय संरक्षण प्राप्त होने के कारण उस काल की कला एवं वास्तुकला पर बौद्ध प्रभाव काफी स्पष्ट था। मौर्योत्तर काल में, कला और वास्तुकला पर हिंदू धर्म का प्रभाव प्रमुख हो गया।

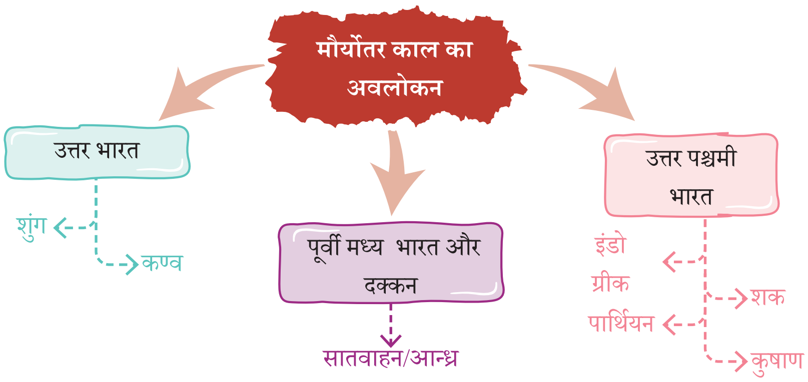

चित्र 1.27: मौययोतर काल की राजनैतिक व्यवस्था

मौर्य काल के बाद की कला और वास्तुकला में चट्टानों को काटकर बनाई गई गुफा वास्तुकला, स्तूप, मूर्तियाँ (गांधार, मथुरा और अमरावती स्कूल) और शिलालेख शामिल हैं।

चट्टानों को काटकर बनाई गई गुफाएँ (Rock-Cut Caves)

इस काल में दो प्रकार की गुफाओं अर्थात चैत्य और विहार का विकास हुआ। गुफाओं को आम तौर पर मानव और जानवरों की आकृतियों से सजाया गया था, उनमें आंगन और पत्थर से सुसज्जित दीवारें भी थीं।

चैत्य (Chaityas)	विहार (Viharas)
इसे प्रार्थना कक्ष के रूप में उपयोग किया जाता था।	ये बौद्ध एवं जैन भिक्षुओं के लिए आवास स्थल थे।
चैत्य स्तूपों के साथ बनाए गए थे।	विहारों में स्तूप नहीं होते थे।
इनमें एक छोटा आयताकार द्वार होता था जो एक मेहराबदार हॉल में खुलता था। इसका आकार एक उल्टे कटोरे के समान था। सबसे अंत में एक स्तूप का निर्माण किया गया था।	इनमें एक मुख्य कक्ष, सभा कक्ष और भोजन कक्ष शामिल थे।
	चट्टानों की गहराई में बने कक्षों में ध्यान के लिए भी कक्ष उपलब्ध कराए गए थे।
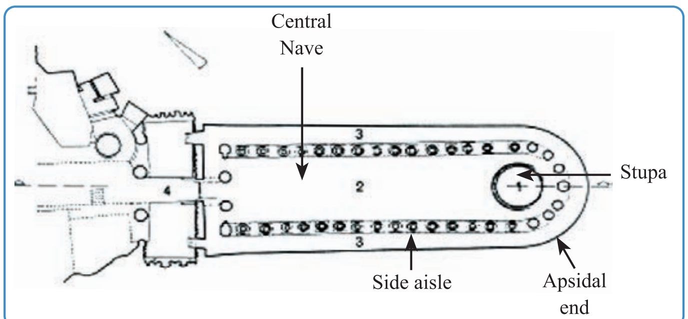 चित्र 1.28: चैत्य की योजना	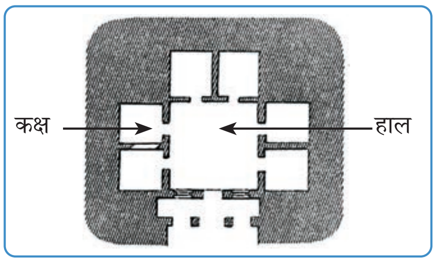 चित्र 1.29: विहार की योजना

पश्चिमी भारत में गुफा परंपरा (Cave Tradition in Western India)

पश्चिमी भारत में ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी के बाद की कई बौद्ध गुफाएँ पाई गई हैं।

- इनमें मुख्यतः तीन वास्तुशिल्प प्रकारों का निष्पादन किया गया है।
  - अप्साइडल वॉल्ट-छत चैत्य हॉल (अजंता, पीतलखोरा, भाजा में पाए गए)।

आर्कुएट शैली और ट्रैबीट शैली के बीच अंतर

आर्कुएट शैली (Arcuate Style)	ट्रैबीट शैली (Trabeate Style)
❑ मेहराबों का निर्माण कीस्टोन से सुसज्जित वौसोइर (इंटरलॉकिंग ब्लॉकों की शृंखला) से किया गया था। ❑ मेहराबों ने इस शैली में गुंबदों का निर्माण संभव बनाया। ❑ प्रयुक्त प्राथमिक सामग्रियाँ: ईंट, चूने का प्लास्टर और गारा।	❑ निर्माण के लिए ब्रैकेट, स्तंभ और लिंटल्स का उपयोग किया गया था। ❑ मन्दिरों के शीर्ष पर शंक्वाकार अथवा वक्ररेखीय शिखर का प्रयोग होता था। ❑ निर्माण कार्य में अधिकतर पत्थरों का प्रयोग किया जाता है।

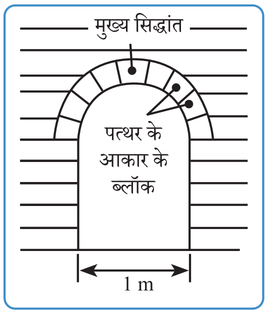

चित्र 1.52: आर्कुट शैली

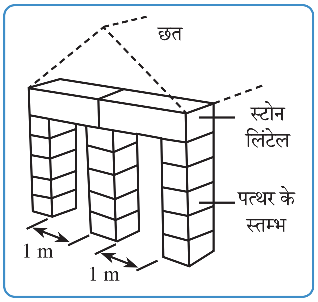

चित्र 1.53: त्रावियत शैली

शैलियों की श्रेणियाँ (Categories of Styles)

इंडो-इस्लामिक वास्तुकला को शाही शैली (दिल्ली सल्तनत), प्रांतीय शैली (बंगाल, जौनपुर, मालवा, बीजापुर), मुगल शैली, सिख शैली एवं राजपूत शैली में वर्गीकृत किया जा सकता है।

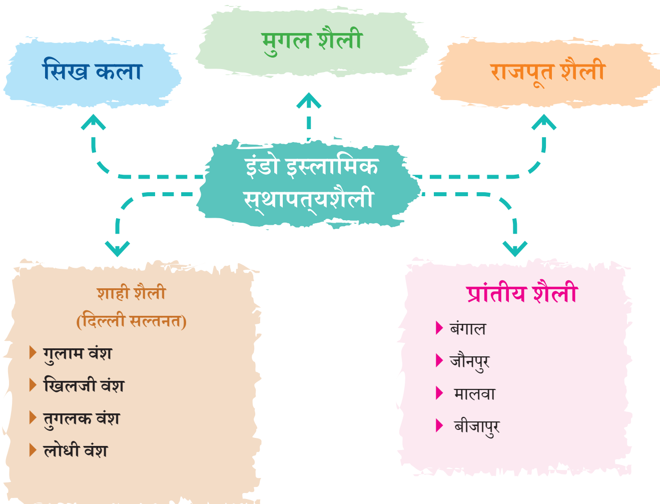

चित्र 1.54: हिन्द-इस्लामी वास्तुकला का वर्गीकरण

शाही शैली (Imperial Style)

यह सल्तनत काल के दौरान शासन करने वाले विभिन्न राजवंशों के तहत विकसित हुआ एवं प्रत्येक शासक ने अपनी कुछ विशेषताएँ प्रदान कीं।

गुलाम/इलबारी राजवंश (1206-1290 ई.)

इस काल की वास्तुकला शैली को मामलुक वास्तुकला शैली के रूप में जाना जाता है।

- उन्होंने कई इमारतों का निर्माण शुरू किया किंतु अधिकांश निर्माण मौजूदा धार्मिक संरचनाओं का नवीनीकरण थे।
- बलबन का मकबरा प्रथम सच्चे मेहराब से सुशोभित था।
- दिल्ली में कुतुब मीनार, कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद, अजमेर में अढ़ाई-दीन-का-झोपड़ा आदि इस काल की प्रमुख इमारतें थीं।

कुतुब मीनार

इसका निर्माण कार्य कुतुब-उद-दीन ऐबक द्वारा शुरू किया गया था जिसे बाद में इल्तुतमिश एवं फ़िरोज़ शाह तुगलक द्वारा पूरा किया गया। इसे पाँच मंजिलों में विभाजित किया गया है। इसे संत ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी से संबद्ध किया जाने लगा।

चित्र 1.55: कुतुब मीनार

- यह 72.5 मीटर की ऊँचाई के साथ भारत की सबसे ऊँची पत्थर की मीनार है।
- यह मीनार सन 1326 तथा सन 1368 में बिजली गिरने से क्षतिग्रस्त हो गयी थी। तत्कालीन शासकों, मुहम्मद-बिन-तुगलक (1325-51) एवं फ़िरोज़ शाह तुगलक (1351-88) द्वारा इसकी मरम्मत की गई थी।
- इसकी सतह पर लगे शिलालेखों के अनुसार इसकी स्थापना सिकंदर लोदी (1489-1517) ने करवाई थी और साथ ही इसकी मरम्मत भी करायी थी।
- यह मीनार बहुकोणीय और गोलाकार आकृतियों का मिश्रण है।
- यह मुख्य रूप से लाल एवं भूरे बलुआ पत्थर से निर्मित है तथा ऊपरी मंजिलों में कुछ हद तक संगमरमर का उपयोग किया गया है।
- इसकी विशेषता अत्यधिक सजी हुई बालकनियाँ और पत्तों वाले डिज़ाइनों से जुड़े शिलालेखों की पट्टियाँ हैं।
- इस मीनार का दैनिक उपयोग 'अजान' अथवा प्रार्थना के लिए होता था। हालाँकि, इसकी अभूतपूर्व ऊँचाई शासक की शक्ति एवं ताकत का प्रतीक थी।
- कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद: कुतुबुद्दीन ऐबक ने 1197 ई. के आसपास मस्जिद का निर्माण कराया था। विजय मीनार (कुतुब मीनार), जो भारत पर मुस्लिम विजय का जश्न मनाती है, इसकी सबसे प्रसिद्ध विशेषता है।

खिलजी वंश (1290-1320 ई.)

इस राजवंश के दौरान वास्तुकला की सेल्जुक शैली की शुरुआत हुई। इसकी प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

चित्र 1.56: अलाई दरवाजा (प्रथम गुंबदनुमा स्थापत्य)

- असली मेहराब, नुकीले घोड़े की नाल के आकार का प्रयोग।
- स्क्विंच के नीचे धँसे हुए मेहराबों के साथ वास्तविक गुंबदों का उद्भव।
- नई निर्माण सामग्री के रूप में लाल बलुआ पत्थर और सजावटी संगमरमर की नक्काशी का उपयोग
- मोर्टार/गारा इस काल में एक प्रमुख भवन निर्माण सामग्री बन गया।
- मेहराब के नीचे की तरफ 'कमल-कली' झालर दिखाई गई है।
- उदाहरण: अलाउद्दीन खिलजी द्वारा निर्मित अलाई दरवाजा, सिरी किला आदि।

ONLYIAS
BY PHYSICS WALLAH

UPSC WALLAH

प्राचीन भारत

प्रारंभिक तथा मुख्य परीक्षा हेतु
एक समग्र शिक्षण श्रृंखला

विषय सूची

1. आरंभिक प्राचीन काल 1

2. हड़प्पा सभ्यता 16

3. वैदिक काल (1,500 - 500 ईसा पूर्व) 28

4. महाजनपद काल (लगभग 600 ईसा पूर्व -300 ईसा पूर्व) 43

5. बौद्ध धर्म 53

6. जैन धर्म और आजीवक 68

7. मौर्य साम्राज्य (लगभग 324 -187 ईसा पूर्व) 76

8. मौर्योत्तर काल (लगभग 200 ईसा पूर्व - 300 ईस्वी) 90

9. सातवाहन 101

10. संगम युग 108

11. गुप्त साम्राज्य 116

12. दक्कन के वाकाटक 130

13. क्षेत्रीय शासकों का प्रादुर्भाव 135

14. प्राचीन इतिहास का कालक्रम 151

ONLYIAS
BY PHYSICS WALLAH

UPSC WALLAH

आपदा प्रबंधन

प्रारंभिक तथा मुख्य परीक्षा हेतु
एक समग्र शिक्षण श्रृंखला

विषय सूची

1. आपदा जोखिम 1

2. आपदा प्रबंधन चक्र 6

3. प्राकृतिक खतरे और उनका शमन 10

4. मानव-जनित आपदाएँ और उनका शमन 50

5. राहत, प्रतिक्रिया और पुनर्बहाली 74

6. आपदा प्रबंधनः संस्थान और नीति निर्देश 86

7. आपदा प्रबंधनः वित्तीयन ढाँचा और क्षमता निर्माण 96

8. अंतरराष्ट्रीय सहयोग 102

9. जलवायु परिवर्तन और आपदा 113

10. कोविड-19 और आपदा प्रबंधन 120

ONLYIAS
BY PHYSICS WALLAH

UPSC WALLAH

अर्थव्यवस्था (भाग - I)

प्रारंभिक तथा मुख्य परीक्षा हेतु
एक समग्र शिक्षण शृंखला

विषय सूची

1. व्यष्टि-अर्थशास्त्र और मूल पारिभाषिक शब्दावली 1

2. राष्ट्रीय आय और सकल घरेलू उत्पाद 7

3. गरीबी, असमानता और बेरोजगारी 21

4. भारत में आर्थिक नियोजन 44

5. समावेशी विकास 62

6. मुद्रास्फीति और व्यवसाय चक्र 74

7. मुद्रा, बैंकिंग और मौद्रिक नीति-I 84

8. मुद्रा, बैंकिंग और मौद्रिक नीति-II 106

9. राजकोषीय नीति 142

10. वित्तीय बाज़ार 186

11. बाह्य क्षेत्र 216

ONLYIAS
BY PHYSICS WALLAH

UPSC WALLAH

अर्थव्यवस्था (भाग - II)

प्रारंभिक तथा मुख्य परीक्षा हेतु
एक समग्र शिक्षण श्रृंखला

विषय सूची

12. भारत में भूमि सुधार 1

13. कृषि 22

14. कृषि और संबद्ध गतिविधियाँ-II 73

15. उद्योग 127

16. सेवा क्षेत्र 168

17. आधारभूत संरचना 181

18. निवेश मॉडल 217

19. अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थान 225

20. सतत विकास और जलवायु परिवर्तन 244

ONLYIAS
BY PHYSICS WALLAH

UPSC WALLAH

पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी

प्रारंभिक तथा मुख्य परीक्षा हेतु
एक समग्र शिक्षण श्रृंखला

विषय सूची

1. पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी 1

2. स्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र 38

3. जलीय पारिस्थितिकी तंत्र 60

4. आर्द्रभूमि, मैंग्रोव और प्रवाल 82

5. जैव विविधता 105

6. जैव-विविधता संरक्षण 127

7. संरक्षित क्षेत्र और संरक्षण तंत्र 162

8. पर्यावरणीय निम्नीकरण, प्रबंधन और संरक्षण 192

9. प्रदूषण 204

10. अपशिष्ट प्रबंधन 242

11. जलवायु परिवर्तन और ग्लोबल वार्मिंग 273

12. जलवायु परिवर्तन प्रबंधन/शमन और अनुकूलन 299

13. सतत विकास एवं कृषि 345

14. पर्यावरणीय कानून, नीतियाँ और संगठन 371

15. पर्यावरण, समाज और नैतिकता 395

16. परिशिष्ट 404

ONLYIAS
BY PHYSICS WALLAH

UPSC WALLAH

भारत की शासन व्यवस्था

प्रारंभिक तथा मुख्य परीक्षा हेतु
एक समग्र शिक्षण श्रृंखला

विषय सूची

1. शासन का परिचय 1

2. भारत में शासन की रूपरेखा-I 15

3. भारत में शासन की रूपरेखा-II 36

4. लोकतंत्र में सिविल सेवाओं की भूमिका 56

5. नवोन्मेषी शासन व्यवस्था 68

6. उत्तरदायित्व और पारदर्शिता 82

7. शासन में नागरिक भागीदारी 107

8. भारत का शासन परिदृश्य 135

9. सामाजिक समावेशन और कल्याणकारी नीतियाँ 142

10. पर्यावरण शासन 157

11. आर्थिक शासन 169

12. भ्रष्टाचार और नैतिक शासन 173

ONLYIAS
BY PHYSICS WALLAH

UPSC WALLAH

मानव एवं आर्थिक भूगोल

प्रारंभिक तथा मुख्य परीक्षा हेतु
एक समग्र शिक्षण श्रृंखला

विषय सूची

1. मानव एवं आर्थिक भूगोल 1

2. जल एवं भूमि संसाधन 9

3. खनिज संसाधन 32

4. ऊर्जा संसाधन 70

5. विश्व जनसंख्या: वितरण, घनत्व, वृद्धि और संरचना 104

6. बस्तियाँ और शहरीकरण 141

7. क्षेत्रीय नियोजन एवं मानव विकास 181

8. कृषि एवं सिंचाई 199

9. विश्व और भारत में उद्योग 247

10. परिवहन, संचार और व्यापार 300

ONLYIAS
BY PHYSICS WALLAH

UPSC WALLAH

भारतीय भूगोल

प्रारंभिक तथा मुख्य परीक्षा हेतु
एक समग्र शिक्षण श्रृंखला

विषय सूची

1. भारत का भूगोल: एक परिचय 1

2. भारत की भूवैज्ञानिक संरचना 12

3. भारत का भौतिक भूगोल 24

4. भारत: अपवाह-तंत्र 63

5. भारत की जलवायु 109

6. भारत की मृदा 140

7. भारत की प्राकृतिक वनस्पति 161

8. प्राकृतिक आपदाएँ 187

9. परिशिष्ट 213

UPSC WALLAH

भौतिक भूगोल

प्रारंभिक तथा मुख्य परीक्षा हेतु
एक समग्र शिक्षण शृंखला

विषय सूची

1. ब्रह्मांड का विकास 1
2. सौरमंडल 12
3. पृथ्वी की उत्पत्ति 29
4. अक्षांश और देशांतर 44
5. पृथ्वी का चुंबकत्व (भू-चुंबकत्व) 57
6. पृथ्वी की आंतरिक संरचना 65
7. शैल/चट्टान 78
8. भू-आकृतिक प्रक्रियाएँ 88
9. प्लेट विवर्तनिकी 95
10. ज्वालामुखी 112
11. पठार और मैदान 125
12. बहिर्जात बल और भू-आकृतिक विकास 131
13. वायुमंडल: विकास, संघटन और संरचना 154
14. ऊर्जा: तापमान और ऊष्मा 169
15. वायुमंडल का तापमान 180
16. जल विज्ञान चक्र और आर्द्रता 192
17. पवनें और वायुदाब पेटियाँ 209
18. जेट स्ट्रीम 224
19. संघनन एवं वर्षण 232

ONLYIAS
BY PHYSICS WALLAH

UPSC WALLAH

भारतीय राजव्यवस्था (भाग - I)

प्रारंभिक तथा मुख्य परीक्षा हेतु
एक समग्र शिक्षण शृंखला

विषय सूची

1. ऐतिहासिक आधार 1

2. संविधान की अवधारणा और निर्माण 9

3. भारत के संविधान की मुख्य विशेषताएँ 17

4. उद्देशिका 23

5. शासन प्रणाली 29

6. संघ और उसके राज्यक्षेत्र 39

7. नागरिकता 50

8. भारत के संविधान में संशोधन 60

9. भारत के संविधान की मूल संरचना 71

10. मौलिक अधिकार 75

11. राज्य की नीति के निदेशक तत्व 108

12. मौलिक कर्तव्य 117

13. केंद्र-राज्य संबंध 122

14. आपातकालीन प्रावधान 147

15. संघीय कार्यपालिका-I 156

16. संघीय कार्यपालिका-II 169

ONLYIAS
BY PHYSICS WALLAH

UPSC WALLAH

भारतीय राजव्यवस्था (भाग - II)

प्रारंभिक तथा मुख्य परीक्षा हेतु
एक समग्र शिक्षण श्रृंखला

विषय सूची

31. कुछ राज्यों के लिए विशेष प्रावधान 1
32. अनुसूचित जाति एवं जनजाति क्षेत्र 5
33. भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक 9
34. वस्तु एवं सेवा कर परिषद् 14
35. वित्त आयोग 17
36. संघ एवं राज्य के अधीन सेवाएँ 21
37. भारतीय निर्वाचन आयोग 31
38. कुछ वर्गों से संबंधित विशेष प्रावधान 36
39. भाषाई अल्पसंख्यकों के लिए विशेष अधिकारी और राजभाषा 42
40. नीति आयोग 49
41. मानव अधिकार आयोग 58
42. राष्ट्रीय महिला आयोग 63
43. राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग 67
44. राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग 71
45. केंद्रीय सूचना आयोग 76
46. भ्रष्टाचार-निरोधक प्रहरी 79
47. राष्ट्रीय अन्वेषण अभिकरण (NIA) 96
48. भारतीय बार परिषद् 99
49. भारत का विधि आयोग 101
50. दलीय व्यवस्था 104
51. चुनाव, चुनाव सुधार और परिसीमन आयोग 114
52. दल-बदल विरोधी कानून 131
53. दबाव समूह 135
54. ई-गवर्नेंस 141
55. परिशिष्ट 143

ONLYIAS
BY PHYSICS WALLAH

UPSC WALLAH

भारतीय समाज और सामाजिक न्याय

प्रारंभिक तथा मुख्य परीक्षा हेतु
एक समग्र शिक्षण श्रृंखला

विषय सूची

1. भारतीय समाज और इसकी मुख्य विशेषताएँ 1
2. जाति व्यवस्था 6
3. सामाजिक वर्ग 16
4. धर्म और समाज 26
5. भारत में नृजातीयता और प्रजातियाँ 39
6. भारत में जनजातियाँ 49
7. परिवार, विवाह और नातेदारी 60
8. शहरीकरण 67
9. ग्रामीण भारत 81
10. गरीबी और विकास संबंधी मुद्दे 98
11. जनसंख्या और संबंधित मुद्दे 115
12. वैश्वीकरण और भारतीय समाज 134
13. भारत में सामाजिक परिवर्तन 156
14. आधुनिक विश्व में महिला सशक्तीकरण एवं इसकी चुनौतियाँ 160
15. भारतीय समाज के सुभेद्य वर्ग 191
16. धर्मनिरपेक्षता 215
17. सांप्रदायिकता 223
18. क्षेत्रवाद 232
19. स्वास्थ्य और पोषण 241
20. शिक्षा 271
21. सामाजिक आंदोलन 297

ONLYIAS
BY PHYSICS WALLAH

UPSC WALLAH

आंतरिक सुरक्षा

प्रारंभिक तथा मुख्य परीक्षा हेतु
एक समग्र शिक्षण श्रृंखला

विषय सूची

1. भारत की आंतरिक सुरक्षा का परिदृश्य 1

2. आंतरिक और बाह्य शत्रु 6

3. विकास और संबंधित विरोधाभास 32

4. अपराध का संस्थानीकरण: छद्म राज्य 51

5. साइबर सुरक्षा 65

6. भारत की कानून और व्यवस्था 84

7. भारत की अंतरराष्ट्रीय सीमाएँ एवं उनका प्रबंधन 105

8. सुरक्षा के समक्ष उभरते नए खतरे 126

ONLYIAS
BY PHYSICS WALLAH

UPSC WALLAH

अंतरराष्ट्रीय संबंध

प्रारंभिक तथा मुख्य परीक्षा हेतु
एक समग्र शिक्षण श्रृंखला

विषय सूची

1. अंतरराष्ट्रीय प्रणाली का विकास 1
2. विदेश नीति के निर्धारक 11
3. भारत की विदेश नीति का उद्गम 14
4. भारत और उसके पड़ोसी देश : एक सिंघावलोकन 24
5. भारत - चीन 37
6. भारत - पाकिस्तान 49
7. भारत - अफगानिस्तान 58
8. भारत - बांग्लादेश 65
9. भारत - नेपाल 69
10. भारत - भूटान 74
11. भारत - श्रीलंका 77
12. भारत - म्याँमार संबंध 81
13. भारत - मालदीव संबंध 84
14. भारत - मॉरीशस संबंध 88
15. भारत और मध्य एशिया संबंध 94
16. भारत - पश्चिम एशिया 106
17. भारत एवं दक्षिण-पूर्व एशिया 132
18. भारत और हिंद-प्रशांत क्षेत्र 153
19. भारत - अमेरिका संबंध 164
20. भारत - रूस संबंध 176
21. भारत - जापान 187
22. भारत - ऑस्ट्रेलिया 191
23. भारत - यूनाइटेड किंगडम 197

ONLYIAS
BY PHYSICS WALLAH

UPSC WALLAH

मध्यकालीन भारत

प्रारंभिक तथा मुख्य परीक्षा हेतु
एक समग्र शिक्षण श्रृंखला

विषय सूची

1. प्रारंभिक मध्यकालीन भारत 1

2. दक्षिणी भारत (लगभग 850-1200 ई.) 13

3. उत्तरी भारत (लगभग 1000-1200 ई.) 29

4. दिल्ली सल्तनत 52

5. विजयनगर साम्राज्य और बहमनी सल्तनत 73

6. मध्यकालीन भारत के प्रांतीय साम्राज्य 90

7. मुगल शासन और परवर्ती मुगल (लगभग 1526-1857 ई.) 101

8. मराठा और अन्य प्रांतीय साम्राज्य 130

9. भक्ति और सूफी आंदोलन 143

UPSC WALLAH

आधुनिक भारत

प्रारंभिक तथा मुख्य परीक्षा हेतु
एक समग्र शिक्षण श्रृंखला

विषय सूची

1. आधुनिक भारत का इतिहास लेखन 1
2. भारत में यूरोपियों का आगमन 6
3. अंग्रेजों से पहले का भारत 20
4. ब्रिटिश विस्तार 35
5. ब्रिटिश विस्तार के विरुद्ध प्रतिरोध 60
6. 1857 का विद्रोह 74
7. सामाजिक-धार्मिक सुधार 88
8. भारतीय राष्ट्रवाद का उदय और विकास 107
9. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से पहले राजनीतिक संघ 113
10. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस: गठन और विचार-विमर्श 117
11. उदारवादियों का युग (1885-1905) 121
12. उग्रवादियों का युग (1905-1909) 127
13. स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन 132
14. क्रांतिकारी गतिविधियाँ (1907-1917 ई.) 142
15. प्रथम विश्व युद्ध और राष्ट्रवादी प्रतिक्रिया 151
16. गांधीवादी युग की शुरूआत (अहिंसक असहयोग के माध्यम से स्वराज का लक्ष्य) 158
17. असहयोग आंदोलन और ख़िलाफ़त आंदोलन 166
18. स्वराजवादियों और परिवर्तन विरोधियों का उदय 172
19. भारत में वामपंथी आंदोलन 177
20. 1920 के दशक की क्रांतिकारी गतिविधियाँ 185
21. साइमन कमीशन और नेहरू रिपोर्ट 191
22. सविनय अवज्ञा आंदोलन, गोलमेज सम्मेलन और गांधी-इरविन समझौता 196
23. सविनय अवज्ञा आंदोलन के बाद के मुद्दे 213
24. कांग्रेस शासन के अट्ठाईस महीने 216
25. द्वितीय विश्व युद्ध और राष्ट्रवादी प्रतिक्रिया 219
26. भारत छोड़ो आंदोलन 230
27. युद्धोत्तर राष्ट्रीय विद्रोह 237

28. स्वतंत्रता और विभाजन 248
29. संवैधानिक विकास 252
30. भारत में सिविल सेवाओं का विकास 277
31. भारत में पुलिस प्रशासन एवं सैन्य व्यवस्था 280
32. भारत में न्यायपालिका का विकास 284
33. प्रशासनिक पुनर्गठन 290
34. ब्रिटिश नीतियाँ और उनके आर्थिक प्रभाव 296
35. भारतीय प्रेस का विकास 315
36. भारत में शिक्षा का विकास 324
37. अकाल नीति का विकास 330
38. आधुनिक भारत में साहित्यिक, कलात्मक और सांस्कृतिक आंदोलन 333
39. सांप्रदायिकता का विकास और भारत का विभाजन 337
40. किसान और आदिवासी विद्रोह 348
41. श्रमिक वर्ग आंदोलन 369
42. भारत में महिला आंदोलन 375
43. भारत में निम्न जाति के आंदोलन 383
44. भारतीय व्यक्तित्व 389
45. विदेशी व्यक्तित्व 413

परिशिष्ट-I 440
परिशिष्ट-II 448
परिशिष्ट-III 455
परिशिष्ट-IV 458
परिशिष्ट-V 467
परिशिष्ट-VI 469
परिशिष्ट-VII 471
परिशिष्ट-VIII 475
परिशिष्ट-IX 482
परिशिष्ट-X 484

ONLYIAS
BY PHYSICS WALLAH

UPSC WALLAH

आज़ादी के बाद का भारत

प्रारंभिक तथा मुख्य परीक्षा हेतु
एक समग्र शिक्षण शृंखला

विषय सूची

1. नवीन राष्ट्र का उदय : 1947-1964 — 1

2. लोकतांत्रिक यात्रा: 1964-1977 — 40

3. 'पुरानी व्यवस्था' की चुनौतियाँ: 1977-1991 — 87

4. इंडिया शाइनिंग: 1991-2003 — 125

5. पुराने प्रहरी (ओल्ड गार्ड्स): 2004-2014 — 153

6. नया भारत: 2014 और उससे आगे — 187

ONLYIAS
BY PHYSICS WALLAH

UPSC WALLAH

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

प्रारंभिक तथा मुख्य परीक्षा हेतु
एक समग्र शिक्षण शृंखला

विषय सूची

1. दैनिक जीवन में विज्ञान और प्रौद्योगिकी 1
2. भारत में विज्ञान और प्रौद्योगिकी से संबंधित प्रमुख संगठन एवं संस्थान 11
3. ब्रह्मांड तथा इससे संबंधित घटनाएँ 28
4. अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी 42
5. नवीकरणीय और गैर-नवीकरणीय ऊर्जा 88
6. नाभिकीय ऊर्जा 111
7. सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी 138
8. उभरती प्रौद्योगिकियाँ 160
9. रक्षा प्रौद्योगिकी 190
10. नैनोप्रौद्योगिकी 226
11. जैव प्रौद्योगिकी की मूलभूत अवधारणाएँ 241
12. जैव प्रौद्योगिकी में उन्नति 262
13. स्वास्थ्य एवं रोग 296
14. अतिचालकता और लेजर 341
15. बौद्धिक संपदा अधिकार (IPR) 352
16. विविध पुरस्कार एवं नवाचार 368

ONLYIAS
BY PHYSICS WALLAH

UPSC WALLAH

नीतिशास्त्र

प्रारंभिक तथा मुख्य परीक्षा हेतु
एक समग्र शिक्षण श्रृंखला

विषय सूची

1. नीतिशास्त्र और मानव सह-संबंध 1
2. मूल्य 20
3. समाजीकरण 29
4. अभिवृत्ति 39
5. सामाजिक प्रभाव एवं अनुनय 53
6. अभिरुचि तथा आधारभूत मूल्य 64
7. भावनात्मक बुद्धिमत्ता 77
8. भारतीय विचारक 89
9. पश्चिमी विचारक 110
10. नैतिक अभिशासन 128
11. लोक प्रशासन और अंतरराष्ट्रीय संबंधों में नैतिक आधार 141
12. अभिशासन का दार्शनिक आधार; शुचिता की संकल्पना, लोक सेवा, लोक सेवा की गुणवत्ता; कार्य संस्कृति 161
13. नैतिक संहिता एवं आचार संहिता 176
14. कॉर्पोरेट गवर्नेंस 189
15. सुशासन 195
16. भ्रष्टाचार तथा नैतिकता 212
17. केस स्टडीज़ 226

ONLYIAS
BY PHYSICS WALLAH

UPSC WALLAH

विश्व इतिहास

प्रारंभिक तथा मुख्य परीक्षा हेतु
एक समग्र शिक्षण शृंखला

विषय सूची

1.	सामंती व्यवस्था का प्रारंभ	1
2.	पुनर्जागरण और प्रबोधन का युग	7
3.	पूँजीवाद का विकास और औद्योगिक क्रांति	12
4.	अमेरिकी क्रांति और गृह-युद्ध	22
5.	फ्राँसीसी क्रांति	33
6.	राष्ट्रवाद का उदय	39
7.	प्रथम विश्व युद्ध और परिणाम	61
8.	समाजवाद एवं रूसी क्रांति का उदय और विकास	80
9.	दो विश्व युद्धों के बीच की अवधि	91
10.	द्वितीय विश्व युद्ध, 1939-45	115
11.	अंतरराष्ट्रीय संगठन और संधि	127
12.	शीत युद्ध काल और प्रमुख घटनाएँ	139
13.	द्वितीय विश्व युद्ध के बाद साम्यवाद का प्रसार	162
14.	20वीं सदी में संयुक्त राज्य अमेरिका की भूमिका	176
15.	साम्राज्यवाद, औपनिवेशीकरण और विऔपनिवेशीकरण	184
16.	तीसरी दुनिया का उद्भव	193

₹229/-

ISBN 978-93-6034-307-1

PHYSICS WALLAH PUBLICATION

PW APP

PW IAS WEB

www.pw.live
www.pwonlyias.com

Talk to our Counselor give a
Missed Call on: +91-9920613613